साधनों तथा श्रमशक्ति की सर्वाधिक उपलब्धता है। प्रदेश से लेकर केन्द्र तक की राजधानियां इस जनपद को राष्ट्रीय मांग से सीधे जोड़ती हैं। कुछ उत्साही उद्यमी भी चाहते हैं कि इन जनपद में उद्योग लगा कर आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने और बेरोजगारों को काम देने की भूमिका में महत्वपूर्ण योगदान कर सकें।

मैं इस लोक महत्व के विषय को सदन में उठाते हुए केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि केन्द्र सरकार जनपद सीतापुर को औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ा घोषित करे और केन्द्रीय सरकार की "कैपिटल एवं सब्सीडी" स्कीम के अंतर्गत उत्साही उद्यमियों को प्रोत्साहित करें। मेरी यह भी मांग है कि सरकार सार्वजनिक क्षेत्र में एक जूट मिल, एक कागज मिल तथा वनस्पति उद्योग लगावे।

(v) SPREAD OF T. B. IN DESERT VILLAGES OF RAJASTHAN

श्री दौलत राम सारण (चुरु): उपाध्यक्ष महोदय, लगातार अकाल से पीड़ित, बेरोजगारी व अर्द्ध बेरोजगारी से चिन्तित संतुलित एवं पौष्टिक आहार के अभाव में कड़ी मेहनत, चिंताओं एवं अभाव से क्षणिक राहत के लिए नशीली वस्तुओं के सेवन के प्रसार के कारण राजस्थान के रेगिस्तानी भू-भाग के निवासियों का स्वास्थ्य रोगों से बचाने की शक्ति के ह्रास के कारण दिन प्रतिदिन खराब होता जा रहा है। इस क्षेत्र के निवासियों में टी० बी० (राजयक्षमा) रोग व्यापक रूप से फैलता जा रहा है। मैंने अपने क्षेत्र चुरू की आठ तहसीलों के विभिन्न चिकित्सकों से संपर्क करके इस संबंध में जानकारी की तो पता चला कि हर 10 रोगियों में से 6 रोगी टी० बी० से पीड़ित होते हैं। चुरू जिले से संलग्न झुंझुनू जिले के तीन हेतमसरबास, कगेसरा, पत्तेसरा गांवों के निवासियों की 5 डाक्टरों ने जांच की तो 99 प्रतिशत पाजिटिव मामले मिले। इसी प्रकार अन्य रेगिस्तानी जिलों की स्थिति है। टी० बी० रोग की व्यापकता के संबंध में जोधपर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में भी काफी समाचार मिलते हैं।

टी० बी० (राजयक्षमा) एक संक्रामक रोग है। इसका इतना अधिक व्यापक प्रसार बहुत खतरनाक और चिंताजनक है। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र के निवासियों के स्वास्थ्य परीक्षा करने और रोग निरोध एवं चिकित्सा की समुचित व्यवस्था करने की गंभीर स्थिति पैदा हो गई है।

आशा है केन्द्रीय सरकार इस ओर विशेष रूप से ध्यान देकर समुचित व्यवस्था कराएगी।

(vi) NEED TO PREVENT EXPLOITATION OF OF LABOUR IN INDIA

SHRI K. LAKKAPPA (Tumkur): According to a recent estimate of I.L.O. India has a labour force of children of more than twelve million. This constitutes a third of Asia's child labour and a fourth of world's working children. Earlier the 1971 census indicated that there were more than ten million child workers of less than fifteen years of age. Most of the child workers are found in rural areas where there is no clear indication of their working conditions. In the urban areas the working conditions of employed children are far from satisfactory. In many trades, as against four and half hours prescribed under the existing legislation, the working hours of children range from six to eight hours. In some fields there is virtually no difference between the working hours of a child and an adult.

There is no uniform minimum age laid down in India for employment of children. Children of very tender age are found working in industries